Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

शिवप्रसाद कृत 'शैलूष' उपन्यास में नट जनजाति की सभ्यता एवं संस्कृति

डॉ. नांग सुलिना चाउतांग
TGT (हिन्दी)
पासीघाट ईस्ट सियांग, अरुणाचल प्रदेश

सारांश

भारतीय समाज संस्कृति और सभ्यता की दृष्टि से विविधता को धारण किया हुआ है और इस विविधता के दर्शन में एकता के कई मूल्य निहित है। भारतीय समाज की विविधता विभिन्न धर्म, वर्ण, वर्ग, सम्प्रदाय, पन्थ और जातियों के अपने संस्कारों और नैतिक–अनैतिक मूल्यों के आधारों पर निर्मित हुई है। भारत जैसे विशाल आबादी वाले देश में विभिन्न सामाजिक वर्गों की अनेक कोटियां विद्यमान हैं। इसी का एक हिस्सा जनजातीय समूहों का है, जिनका हमारे समाज में ऐतिहासिक दृष्टि से एक व्यापक समाज–सांस्कृतिक परिदृश्य है। प्राचीन युग से लेकर आज तक के विज्ञान युग में जनजातीय समुदायों का देश के अलग–अलग क्षेत्र, भूप्रदेश, जंगल, पहाड़ तथा दूरदराज के इलाकों में बसेरा रहा हैं। जिस जनजाति का जहाँ निवास रहा है, वहाँ पर उस जनजाति की अपनी विशिष्ट संस्कृति और सभ्यता विकसित होती रही है। प्रायः आज भी भारतीय समाज की जनजातियों में ऐतिहासिक तथ्यों, जीवन मूल्यों–सन्दर्भों एवं आचार–विचारों आदि में विभिन्नता दिखाई देती है। देश की सभी जनजातियाँ विभिन्नता के दर्शन की परिचायक रही हैं। यद्यपि प्रत्येक जनजाति अपनी–अपनी अलग पहचान रखते हुए भी भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। प्रस्तुत आलेख में शिवप्रसाद कृत 'शैलूष' उपन्यास में नट जनजाति की सभ्यता एवं संस्कृति को दिखाया गया है।

प्रमुख शब्द– भारतीय संस्कृति, नट जनजाति, जीवन मूल्य, सभ्यता एवं संस्कृति।

समकालीन दौर के जनजातिमूलक उपन्यास लेखन में शिवप्रसाद सिंह का महनीय योगदान है। इन्होंने खानाबदोश तथा अपराधी कही जानेवाली नट जनजाति के जीवन को केन्द्र में रखकर 'शैलूष' उपन्यास का सर्जन किया है। 'शैलूष' सन् 1986 में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास के लेखन का मुख्य प्रेरणा स्रोत नट जनजाति का जीवन रहा है। शिवप्रसाद सिंह ने स्वयं अपनी मानसिक प्रेरणा के सन्दर्भ को 'आत्मन्' यानी भूमिका में बताते हैं, ''शैलूषों के हक की लड़ाई मैंने दस वर्ष की उम्र में अपने चाचा की छावनी गोसइसी पुर में देखी। मैंने 'आर–पार की माला' जो नटों पर लिखी शीर्षक मेरे प्रथम संग्रह का शीर्षक बनी। फिर करैता के खलिहान में इन शैलूषों के डेरे तो हर गर्मी के दिनों में उतरते ही थे। मैंने उनकों वहाँ भी देखा। इनकी लड़ाई में मैं हमेशा शामिल रहा। वह लड़ाई मेरे जेहन में उतरती गयी।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

नये रूप में सर्वथा रूप बदलकर हमेशा एक ही दृश्य दिखता रहा पराजय, पुलिस के डंडों के नीचे लहू–लुहान होते जरायम पेशे वाले 'शैलूष' मुझे रात में भी मेरी चादर खींचकर चिल्लाते रहते, 'कब तक हमारी कथा व्यथा को छिपाये रहोगे।' मैं उन दुःस्वप्नों को बिना कागज पर उतारे शांति नहीं पा सकता था। वह सब सही ढंग से उतारने की कोशिश मैंने की है। उतारा ही नहीं, बबूल के कांटों को अपने कलेजे से उखाड़ कर जनधारा में फेंक दिया है।''[1] इस मानसिक प्रक्रिया के अलावा लेखक ने उपन्यास को वर्तमान समय की समस्याओं से जोडने के लिए नटों के खानाबदोश जीवन को स्थिरता प्रदान की है। सत्यदेव त्रिपाठी के शब्दों में, ''शैलूषों के जीवन को यूं ही चित्रित किया जाता, तो वह उपन्यास न बन पाता। उसे उपन्यास बनाने के लिए लेखक ने वर्तमान समस्याओं से जोड़ा भी है। खानाबदोशों की जिंदगी जीने वाले नटों को घर–गृहस्थी वाला बनाने के लिए कहीं भूमि की जरूरत थी। यह जमीन की लड़ाई ही कथा की मुख्य वस्तु है। इस जमीन–प्राप्ति की कथा का स्रोत स्वातंत्र्योत्तर भारत में भूमिहीनों को जमीन आवंटित करने का वह नियम है. जिसके बिना यह कथा द्वार खुलता नहीं। इसी का सहारा लेकर शिवप्रसाद सिंह ने 'शैलूष' में नटों के सामान्य जीवन जीने का ताना–बाना बुना है।''[2] स्पष्ट है कि रचनाकार ने नटों के जीवन और संघर्ष को नजदीक से देखा है और उसे समकालीन व्यवस्था के साथ जोड़कर 'शैलूष' शीर्षक से कधात्मक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है।

'शैलूष' उपन्यास की कथावस्तु मिर्जापुर और विंध्याचल–पूर्वांचल के परिवेश में विकसित होती है। कथा के केन्द्र में चंदौली तहसील का रेवतीपुर गांव है। इस गांव में जुड़ावन नट के कबीले को सरकार द्वारा चालीस एकड़ जमीन दी जाती है, परन्तु इस जमीन पर गांव के जमींदार घुरफेकन तिवारी अपना कब्जा करना चाहते हैं। वह जमीन को निगलने के लिए कुटिलता पूर्वक अनेक खड़यंत्र रचता है। अपनी जाति के रिश्तेदार, राजकीय व्यवस्था से जुड़े लोग, पुलिस प्रशासन तथा गुंडों का सहारा लेकर नटों को उत्पीड़ित करता है। यद्यपि दूसरी ओर से हर स्थिति में जुड़ावन नट का कबीला सब्बो के निर्देशन में जमीन प्राप्ति के लिए संघर्ष करता है। उपन्यास में नटों के जीवन को अपने हक और अस्मिता के प्रति जागरुक करने का कार्य सब्बो मौसी करती है। जुड़ावन नट के कबीले के सभी चरित्र भी सब्बो का सम्मान करते हैं। वह नटों में आत्मसम्मान और अस्मिता को जगाने वाली एक शिक्षित, जागरुक और आधुनिक विचारों से युक्त नारी चरित्र है। वैसे तो सब्बो जाति से ब्राह्मण है, पर उसने अपने जाति के नियमों, कुल की मर्यादाएं और सीमाओं को लांघकर और संपन्नता को त्यागकर जुड़ावन से प्रेम किया था। सब्बो नटों को खानाबदोश से सद्गृहस्थ बनाने का उत्तरदायित्व निभाती है। उपन्यास की जो केन्द्रीय समस्या जमीन की लड़ाई है उसके लिए जुड़ावन सरदार को आगाह करती है। जमीन प्राप्ति की इस लड़ाई में घुरफेकन तिवारी द्वारा इस्तेमाल किये सारे प्रयोग असफल हो जाते हैं और आखिर में नटों

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

को अपने हक की जमीन मिल जाती है। इस जमीन प्राप्ति के संघर्ष की मुख्य कथा के अलावा उपन्यास में नटों का अभावग्रस्त जीवन और लोकसंस्कृति के अंकन हेतु विभिन्न कथाओं का संयोजन हुआ है। जुड़ावन, रेवती, सावित्री, रूपचंद, सोनिया, रजिया, गोपू, मायनवा, सूरज, अमरित, सुधाकर, ताहिरा और सलमा की प्रेम कहानियों के माध्यम से विभिन्न सन्दर्भ उद्घाटित हुए है। लल्लू काका के व्यक्तित्व की कथा कबीले के सबसे बुजुर्ग नट के रूप में आती है। वे अनपढ़ होने के बावजूद अनुभूति के आधार पर हर चीज के प्रति देखने की अपनी दृष्टि रखते हैं। कलेक्टर सारस्वत और सुरेन्द्र शुक्ल की कहानियों में मानवीयता के रिश्तों की पहचान का पक्ष उभरता है। इसके अतिरिक्त उपन्यास में नटों के समानांतर दलितों के शोषण और संघर्ष की व्यथा–कथा भी प्रस्तुत है। पुलिस प्रशासन की नीतियां और कार्यप्रणाली का विस्तृत अंकन भी किया गया है। उपन्यासकार ने नटों के जीवन को उजागर करने के लिए सहायक रूप से पेश किया है।

'शैलूष' उपन्यास में नटों की लोक संस्कृति, इतिहास, सामाजिक अन्तर्विरोध एवं अन्तर्द्वंद्व यथास्थान प्रस्तुत हुए है। नटों की संस्कृति में कबीलाई जीवन अभिन्नता से जुड़ा हुआ है। वे रुक जाते हैं तो उन्हें कबीले का स्वरूप प्राप्त होता है और वे चलने लगते है तो काफिले के रूप में पहचाने जाते हैं। इस कबीला और काफिला के समन्वय से विकासोन्मुख रही नटों की संस्कृति और सभ्यता का चित्रण उपन्यास में आया है। लेखक ने नटों की सांस्कृतिक चेतना, आर्थिक विषमता और अभावग्रस्त जीवन, रहन–सहन, वेशभूषा, खान–पान, रीति–रिवाज, विश्वास–अंधविश्वास, आल्हा दंगल, धार्मिक अनुष्ठान, नैतिकता, अनैतिकता, लोकगीत और लोक विश्वास आदि का यथास्थान चित्रण किया है। नटों के विवाह से सम्बन्धित रस्म–रिवाजों का जिक्र माणिक, रूपा और सूरजितवा की शादी के समय में आता है। ''उनमें विवाह को सम्पन्न करने के लिए पुरोहित की भूमिका लल्लू काका ही निभाते हैं। नट जाति में दहेज प्रथा के तहत वर मूल्य के साथ वधू मूल्य देने का भी प्रचलन रहा है। उनके विवाह में डलवा भेजने की रस्म का महत्त्व रहा है। डलवा देना नटों में हैसियत का प्रतीक माना जाता है। इनके विवाह की पूर्णता तभी होती है जब लड़का लड़की की सिंदूर से सात बार मांग भरता है और दोनों एक–दूसरे को शराब पिलाते हैं।''[3]

नटों के जीवन में गीत और नृत्यों की परम्परा जन्मजात रही हैं। उपन्यास में पूजा के गीत, जांत के गीत और आल्हा दंगल के गीत आदि का प्रचुर प्रयोग मिलता है। ''उपन्यास में बशीर और जुड़ावन के कबीलों की अलग–अलग पार्टियों में हुई आल्हा दंगल में प्रस्तुत नटों के गीत लोककला की धरोहर को दर्शाते हैं।''[4] जुड़ावन कबीले के प्रत्येक सदस्य ने मधुर संगीत और कला को आत्मसात किया हुआ है। उपन्यास के चरित्र लल्लू काका का पिता रज्जब नट संगीत के क्षेत्र में अपना सानी नहीं रखता। ''उसकी ढोलक बजाने की कला विंध्याचल की खोहों से लेकर उत्तरी हिन्दुस्तान में फैले नटों के कबीलों में मशहूर थी।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वह सारी पब्लिक को ढोल की थाप पर नाचने के लिए मजबूर कर देता था।''[5] इसी प्रकार ननकू तथा अमरित आल्हा गायन में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। नटों में धार्मिक आस्थाओं के तहत पूजा, अंधविश्वास, भीरुता, व्रत, मन्नते, भूत–प्रेत, बलि प्रथा, झाड़–फूंक जैसी मान्यताएं प्रचलित रही हैं। इन मान्यताओं का मूल कारण उनकी अशिक्षा और अज्ञानता है। वे मान गुरु, पीर मखदूम साहब, कुलदेवी नथिया, रेवती मां इनके प्रति श्रद्धा रखते हैं। इन जनजातियों का ऐसा मानना है कि ये सभी जीवन के दुःख–दर्द, बीमारी और विपत्तियों से मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं। इनके सम्मान की कई लोक कथाएं उनमें प्रचलित रही हैं। नटों के जीवन में स्थित विभिन्न विश्वासों एवं अंधविश्वासों के उल्लेख उपन्यास में आते है। ''लल्लू काका कुछ वैद्यकीय इलाज करते हैं, पर पूरे नट–समुदाय में मरी–मसान की पूजा से रोगों के इलाज का विश्वास व्याप्त है। ओझों को बुलाकर गोवरधन अपने बेटे को ठीक कराना चाहता है। उसे डॉक्टर की दवा पर विश्वास नहीं है। गरिबू ओझा गोरया महावीर की पूजा करता है। मुर्गा कटता है, सूअर भी कटता है। सब कुछ ओझा लोग उड़ा जाते हैं। दैतरा का नाम लेकर वे भूत भगाने का मंत्र पढ़ते हैं। लेखक ने इस अंधविश्वास का नकारात्मक पक्ष तुरन्त दिखा दिया है। दो सौ रुपये सफाचट कर गये और ननकू–मानिक ने आकर उनके सारे चमत्कार की कलई खोल दी। अंधविश्वासों का एक पूरा जखीरा है, उनके यहाँ। रेवती की परती के अंधविश्वास तो पूरे गांव पर छाये हैं। वहाँ दतौन तक कोई नहीं तोड़ता, घास नहीं काटता। रेह लेने वाला धोबी हैजे से मरता है, तो भी सब उसे रेवती का क्रोध ही समझते हैं। लेकिन रूपा वहां की रेह लेती है।''[6]

नटों के जीवन की स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुरूप उनकी रिश्तेदारी, मेहमान नवाजी, आपसी सम्बन्ध और आत्मीयता के पहलुओं का अंकन भी लेखक ने किया है। नटों में हिन्दू और मुस्लिम कबीले रहे हैं। इन कबीलों में परस्पर साहचर्य रहा है। उपन्यास में नट स्वयं को हिन्दू–मुस्लिम कहने की अपेक्षा बनाफर कहना पसंद करते हैं। लल्लू नट बताता है, ''हम आज से नहीं, पांच सौ वर्ष पहले से अपने आदिम पुरखे मान गुरु और नथिया बनजारिन की सौगंध निभाते आ रहे हैं। हमारे पूर्वज कह गये हैं, हिन्दू–मुसलमान में भेद करना बनाफर खून की तौहीन है। हम आल्हा–ऊदल की संतान हैं। हम बनाफर हैं, हम मरने–जीने से नहीं डरते। बस, एक लक्ष्य है, आजाद रहना और आजाद घूमना।''[7] इस स्वतंत्र मानसिकता से वे एक दूसरे के साथ रोटी–बेटी का व्यवहार करते हैं। ''रज्जब नट मुस्लिम थे जबकि मटरू हिन्दू था। रज्जब नट का लड़का और कबीले का पुरोहित लल्लू हिन्दू है जबकि उसकी पत्नी सकीना मुस्लिम। लल्लू का बेटा कोमल हिन्दू था और उसकी औरत भी हिन्दू थी।''[8] इसी तरह मुस्लिम ताहिरा को जुड़ावन नट के कबीले में पनाह देने का प्रसंग वर्णित है। जब एक संवाददाता ताहिरा को कहता है कि क्या तुम्हें हिन्दू जुड़ावन के कबीले से नफरत है? तो ताहिरा कहती है, ''जनाब नट न हिन्दू है न मुसलमान। उसे मान गुरु का हुकुम ढोते

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

रहना है। हमारा कबीला यानी जुड़ावन का कबीला एक साथ दो कसमें खाता है, जय मखदूम साईं, जै मान गुरु।''[9] नटों में मेहमान नवाजी में भी मानवीय मूल्यों को पहले महत्त्व दिया जाता है। रेवतीपुर में जमीन के संघर्ष के समय आने वाले माणिक, सुरेन्द्र तथा उसके शहरी मित्र, पुलिस तथा संवाददाता आदि का पहले आतिथ्य सत्कार किया जाता है। इसके अलावा नटों में आत्मीयता के पहलुओं का दर्शन जुड़ावन के व्यवहार एवं विचारों से होता है। वह अपने दुश्मन के तौर पर व्यवहार करने वाले करीम, बशीर, नासिर, सलमा तथा हसीना आदि के प्रति सम्मान की भावना रखता है और अपने कबीले के सदस्यों को भी उनके साथ मानवीय मूल्यों के तहत आचरण किये जाने की सलाह देता है।

आजादी के बाद समयचक्र की गतिविधियों से प्रेरित होकर एवं अपने आसपास के परिवेश से प्रभाव ग्रहण कर नटों के जीवन व्यवहारों में परिवर्तन होता रहा है। वे नैतिकता और अनैतिकता के मूल्यों की पहचान करते हुए सुधार की ओर अग्रसर हुए हैं। 'शैलूष' उपन्यास में लेखक ने नट जनजाति की प्रथा–परम्परा और लोक मान्यताओं में हो रहे सुधारों को दर्शाया है। जुड़ावन नट का कबीला परम्परागत जरायम पेशे में संलग्न नहीं है। उसके कबीले के सदस्यों ने शराब का नशा करना छोड़ दिया है। लल्लू काका पंचायत बुलाकर शादी–ब्याह की मेहर प्रथा, अलग–अलग परिवारों को सिद्धा देने की प्रथा और फिजूल खर्ची को बंद करने का ऐलान करते हैं।[10] सब्बों के कहने पर नट युवक–युवतियों में आधुनिक सोच का विकास होता है। वे नाच–गाना और कला करतब दिखाकर अपमानजनक जिंदगी जीना नहीं चाहते हैं।

निष्कर्षतः शिवप्रसाद सिंह कृत 'शैलूष' उपन्यास में नट जनजाति की सभ्यता एवं संस्कृति के दर्शन सर्वत्र दिखायी पड़ता है।

संदर्भ सूची–

1. शिवप्रसाद सिंह, शैलूष, भूमिका, पृ. XV
2. सत्यदेव त्रिमूर्ति, शिवप्रसाद सिंह का परावर्तक कथा साहित्य, पृ0 139
3. शिवप्रसाद सिंह, शैलूष, पृ. 258
4. वही, पृ. 149, 150
5. वही, पृ. 160
6. सत्यदेव त्रिमूर्ति, शिवप्रसाद सिंह का परावर्तक कथा साहित्य, पृ. 143
7. शिवप्रसाद सिंह, शैलूष, पृ. 178
8. वही, पृ. 177
9. वही, पृ. 179
10. वही, पृ 243